E-Learning Study Material

By Prof (Dr) YADWENDRA SINGH
MAHARAJA COLLEGE, ARA
VKS UNIVERSITY, ARA, BIHAR

BA PART THIRD ECONOMICS HONS
PAPER- SIX

विश्व के आर्थिक विकास के इतिहास में जापान के कुटीर और लघु उद्योगों का महत्व :-

Cottage and Small Scale Industries in Japan :-

जापान के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में कुटीर एवं लघु उद्योगों का विशेष स्थान है। वस्तुत: जापान में अधिकांश उत्पादन और अधिकांश व्यक्तियों के लिए रोजगार इन्हीं लघु उद्योगों के द्वारा प्राप्त हुआ। जापान में 300 से कम कर्मचारियों एवं मजदूरों के साथ काम करने वाली इकाइयों को लघु एवं मध्यम उद्योग इकाइयों की श्रेणी में रखा जाता है तथा ऐसी ही इकाइयों में जापान की कार्यशील जनता का 81 प्रतिशत से भी अधिक व्यक्ति रोजगार प्राप्त करते आ रहे हैं। जापान के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा उद्योग मंत्रालय के अनुसार जापान में 1975-85 के बीच लघु एवं मध्यम आकार वाले उद्योगों में काम करने वाले लोगों की

Page-2.

संख्या में 6.3 प्रतिशत वृद्धि हुई एवं इनकी संख्या 73.5 लाख से बढ़ कर 78.1 लाख हो गयी जबकि इस अवधि में बड़े उद्योगों में इनकी संख्या में 7.1 प्रतिशत की कमी आई और वह 33.1 लाख से घट कर 30.7 लाख रह गयी। देश में जितने व्यवसायिक प्रतिष्ठान हैं उनके 80 प्रतिशत से भी अधिक प्रतिष्ठानों में 30 से कम ही व्यक्ति कार्य करते हैं अर्थात 4/5 औद्योगिक इकाइयाँ लघु पैमाने की हैं। फिर भी इन्हीं लघु उद्योगों के द्वारा जापान का इतना विकास हुआ और गुण तथा परिमाण (Quality and Quantity) दोनों दृष्टिकोणों से इतना अधिक उत्पादन हुआ कि संसार के दूसरे देशों ने यह आवाज उठाई कि जापान "सामाजिक राशिपातन" (Social dumping) कर रहा है अर्थात दूसरे देशों में अपनी वस्तुओं के लिए बाजार सुनिश्चित करने के लिए अपनी वस्तुओं को अत्यन्त ही कम मूल्य पर बेच रहा है। इस आवाज का आधार यह था कि जापानी वस्तुएं गुण एवं अत्यन्त अच्छी और टिकाऊ तो होती ही थी सस्ती भी होती थी। इन्हें अधिक मात्रा में बाहर भेजा जाता था।